INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: VIII	Department: Hindi (2nd Lang)	Date-15.10.25
Q. Bank	Topic: कबीर की साखियाँ	Note: Pls. write in your Hindi note book

प्रश्न-उत्तर

अति लघु प्रश्न-

प्र.1-कवि साधु से क्या न पूछने की सलाह देता है?

उ- कवि साधु से उसकी जाति न पूछने की सलाह देता है |

प्र.2- 'साखी' शब्द का क्या अर्थ है?

उ-'साखी' शब्द का अर्थ है-'साक्षी' अर्थात आँखों से देखा हुआ |

प्र.3.जग में कोई किसी का बैरी कब नहीं होता ?

उ-जब व्यक्ति का मन शीतल होता है तब जग में कोई किसी का बैरी नहीं होता ।

प्र-4.हमें अहंकार क्यों त्यागना चाहिए ?

उ-जो मनुष्य अहंकार त्याग देता है उस पर सब कृपाभाव बनाए रखते हैं ।

प्र.5.भगवान का नाम जपने के लिए मनुष्य किस चीज़ का प्रयोग करता है ?

उ.भगवान का नाम जपने के लिए मनुष्य माला का प्रयोग करता है ।

प्र.6.घास का तिनका किसका प्रतीक है?

उ. घास का तिनका कमजोर एवं तुच्छ व्यक्ति का प्रतीक है ।

प्र-7. घास कब कष्टप्रद बन जाती है?

उ– घास तब कष्टप्रद बन जाती है जब घास का सूखा तिनका आँख में चला जाता है।

लघु प्रश्न-

प्र.8 'तलवार का महत्त्व होता है म्यान का नहीं'- उक्त उदाहरण से कबीर क्या कहना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-कबीरदास जी के अनुसार मनुष्य की सुंदरता को उसके शरीर की अपेक्षा उसके गुणों से आँकना चाहिए क्योंकि शरीर तो बाहरी आवरण है जबकि सच्चाई उसका अंतर्मन है। इसलिए कवि कहते हैं कि तलवार का महत्त्व होता है म्यान का नहीं।

प्र.9. पाठ की तीसरी साखी-जिसकी एक पंक्ति है 'मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं' के द्वारा कबीर क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर- तीसरी साखी में कबीर दास जी कहना चाहते हैं कि मनुष्य का मन चंचल होता है। वह हाथ में माला और जबान पर हरिनाम तो जपता रहता है किन्तु भगवान् का नाम लेना तब सार्थक होता है जब मनुष्य अपने चंचल मन पर काबू पा लेता है।

प्र-10. कबीर के दोहों को साखी क्यों कहा जाता है?

उत्तर- कबीर के दोहों को साखी इसलिए कहा जाता है क्योंकि साखी शब्द 'साक्षी' का तद्भव रूप है | इसका

अर्थ है आँखों से देखा हुआ |अनपढ़ कबीर जी ने इस दुनिया में जो कुछ देखा, सुना और सहा उन अनुभवों को दोहों के रूप में व्यक्त किया है |

दीर्घ प्रश्न-

प्र॰11. कबीर, घास की निंदा करने से क्यों मना करते हैं। पढ़े हुए दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कबीर दास जी छोटे लोगों (दबे-कुचले व्यक्तियों)को कमज़ोर समझकर उसकी उपेक्षा करने को मना करते हैं। मनुष्य घास को पैरों के नीचे रौंदने वाली वस्तु समझता है और उसे कमज़ोर मानता है । उसे ऐसा नहीं सोचना चाहिए क्योंकि जब एक घास का तिनका भी आँख में चला जाता है तो वह बहुत कष्ट देता है। इसलिए हमें किसी को कमज़ोर समझकर उसकी निंदा नहीं करनी चाहिए या उसे कष्ट नहीं देना चाहिए।

प्र-12. 'आपा' 'आत्मविश्वास' 'उत्साह' में क्या कोई अंतर है? स्पष्ट कीजिए|

उत्तर- हाँ ! अंतर है |इन सभी शब्दों के अर्थ अलग-अलग हैं |

'आपा'का अर्थ है- अहंकार, जिसके कारण व्यक्ति स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझता है |

'आत्मविश्वास' का अर्थ है-अपने ऊपर विश्वास, जिसके बल पर व्यक्ति कठिन-से-कठिन कार्य को करने की ठान लेता है और पूरा कर लेता है |

'उत्साह'का अर्थ है-किसी कार्य को करने का जोश। यह लोगों में ख़ुशी और उमंग पैदा करने वाला गुण है |

प्र-13. कबीर की साखियाँ हमें क्या संदेश देती हैं?

उत्तर - कबीर की साखियाँ हमें यह संदेश देती हैं कि हमें साधु से उनकी जाति न पूछ कर उन से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। किसी से भी हमें कटु वचन नहीं बोलना चाहिए। ईश्वर की भक्ति हमें स्थिर मन से करनी चाहिए। हमें अपना स्वभाव शांत रखना चाहिए और सभी को समान भाव से देखना चाहिए। हमें कमज़ोर व्यक्ति की निंदा नहीं करनी चाहिए । कबीर की साखियाँ हमें जीवन मूल्यों के बारे में बताती हैं ।

****